Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2281–2285

NATURE OF EMOTIONS IN ANAMIKA'S POETRY

अनामिका के काव्य में संवेदनाओं का स्वरूप

Preeti Yadav [1], Dr. Dhanesh Kumar Meena [2]

[1] Research Scholar, Mangalayatan University (Aligarh), Uttar Pradesh, India
[2] Mangalayatan University (Aligarh), Uttar Pradesh, India

ABSTRACT

English: Emotions are directly related to consciousness which connects the poet to this world and maintains the specialty of both. In literature, the element of emotions is expressed through words. The poet takes the help of expression skills for this expression. Thus, it can be said that the poet is an expert in the expression of poetic emotions whose basis of poetic emotions is the social environment of the time, by experiencing which he expresses himself and others. In giving form and direction to Anamika's poetic emotions, the natural beauty of Bihar, human happiness and sorrow, life view influenced by Tolstoy's spirit of public welfare, life-force relation, etc. The theory has directly or indirectly influenced feminist consciousness. The effect of any object, emotion or situation on the heart and the reaction to it is called empathy. This can also be understood in another way. This world is so big and full. It has so many colors and forms. There are so many substances, so many objects. Every object, every event affects us in some way or the other. Just like throwing a pebble in water creates waves, similarly when we see or hear something or when something happens to us, we also react. Our heart is affected and then a feeling is generated according to this effect. This effect of objects on the heart and the reaction generated from it is called empathy. While talking about different forms of empathy, the first thing that we should always keep in mind is that nothing can happen in the air. / Meaning to say is that when we are talking about a poet, his poetry has to be kept in front. / Every word of the poem has to be read and understood. / Anamika is from Bihar state, so the effect of Bihar state can be seen on her poetry. / One's personal experience or knowledge towards others through one's senses is called sympathy. / According to Hindi Gyan Kosh, sympathy means-

The understanding or experience or feeling that happens in the mind. / The sorrow or sympathy that arises in the mind after seeing someone's grief, sorrow, loss, suffering etc. is called sympathy. / Pain arising from the pain of others. / Sympathy means experience or knowledge gained through the senses, but nowadays it is generally used more in the sense of sympathy. / In psychology, this word is still used in its original meaning and in that sense it is the first conscious reaction of the body part towards any external stimulus. / In return for this, the person gets knowledge about his surroundings. / For sympathy, any The presence of a stimulant is considered essential; only the qualities related to it arouse sensitivity in humans.

Hindi: सम्वेदना का सीधा सम्बन्ध चेतना से है जो कवि को इस जगत से जोड़ती हुई दोनों की विशेषता को भी बनाये रखती है द्य साहित्य में सम्वेदना तत्व की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से की जाती है द्य कवि इस अभिव्यक्ति के लिए अभिव्यंजना कौशल का सहारा लेता है द्य इस प्रकार कहा जाता जा सकता है कि कवि काव्य-सम्वेदना की अभिव्यक्ति में परांगत है जिसकी काव्य-सम्वेदना का आधार तत्कालीन सामाजिक परिवेश है जिसको अनुभूत कर वह स्व और पर को अभिव्यक्त करता है द्य अनामिका की काव्य-सम्वेदना को रूप और दिशा देने में बिहार का प्राकृतिक सौन्दर्य मानवीय सुख-दुःख टालस्टाय की लोकमंगल की भावना से प्रभावित जीवन दृष्टि, जीवन-शक्ति सम्बन्ध सिध्दांत, स्त्रीवादी चेतना को प्रतक्ष्य-अप्रतक्ष्य रूप से प्रभावित किया है द्य कसी भी वस्तु भाव या स्थिति का हृदय पर जो प्रभाव पड़ता है और उसकी जो प्रतिक्रिया होती है, उसे ही सम्वेदना

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5465

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

कहतें हैं द्य इस बात को दुसरे ढ़ंग से भी समझा जा सकता है द्य यह दुनिया कितनी बड़ी है और कितनी भरी-पूरी है द्य इसके इतने सारे रंग और रूप है द्य इतने सारे पदार्थ हैं, इतने वस्तूवें हैं द्य प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक घटना हमपर किसी न किसी रूप में असर डालती है, जैसे पानी में कंकड़ फेकने से तरंग उठती है वैसे ही हम जब कुछ देखतें-सुनते हैं या जब हमें कुछ होता है तो हम भी प्रतिक्रिया करतें हैं द्य हमारा ह्रदय प्रभावित होता है और तब इस प्रभाव की अनुरूप भाव उत्पन्न होता है द्य वस्तूवों का ह्रदय पर पड़ने वाला यही प्रभाव और उससे उत्पन्न प्रतिक्रिया ही सम्वेदना कहलाती है द्य सम्वेदना के भिन्न-भिन्न रूपों में बात करने से पहली बात जो हम हमेशा ध्यान में रखें वह यह कि कोई भी बात हवा में नहीं हो सकती है द्य कहने का अर्थ है कि जब हम किसी कवी के बारे में बात कर रहे हैं तो उसकी कविता को सामने रखना पड़ेगा द्य कविता के एक-एक शब्द को पढ़ना समझना पड़ेगा द्य अनामिका बिहार प्रान्त के हैं अतः उनकी कविता पर बिहार प्रान्त का असर स्वतः ही देखा जा सकता है द्य अपने इन्द्रियों के द्वारा दूसरे के प्रति अपनी निजी अनुभव या ज्ञान को सम्वेदना कहतें हैं द्य हिंदी ज्ञान कोष के अनुसार सम्वेदना का अर्थ है-
मन में होने वाला बोध या अनुभव या अनुभूति होता है द्य किसी के शोक, दुःख, हानि, कष्ट आदि को देखकर मन में उत्पन्न होने वाला दुःख या सहानुभूति हीं संवेदना कहलाता है द्य दूसरों की वेदना से उत्पन्न वेदना द्य सम्वेदना का अर्थ ज्ञानइन्द्रियों के द्वारा प्राप्त अनुभव या ज्ञान है किन्तु आजकल सामान्यतः इसका प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में अधिक होने लगा है द्य मनोविज्ञान में अब भी इस शब्द का प्रयोग इसके मूल अर्थ में ही किया जाता है और उस अर्थ में यह किसी बाह्य उत्तेजक के प्रति शरीर अंग की सर्वप्रथम सचेतन प्रतिक्रिया होती है द्य इसी के बदले में व्यक्ति अपने परिवेश के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है द्य सम्वेदना के लिए किसी उत्तेजक का होना आवश्यक माना जाता है द्य उससे सम्बन्धित गुण ही मानव में सम्वेदना जाग्रत करतें हैं

Keywords: Non-Expression, Expression, Sprinkle, Paper, Tassel, Interlace, Bound, Landscape, Supli, Reconnaissance, अभव्यक्तिए अभिव्यंजनाए छिटकए वरकए थसाठस्सए पगुरानेए ज़िल्दए परिदृश्यए सुपलीए टोह

1. प्रस्तावना

सम्वेदना का सीधा सम्बन्ध चेतना से है जो कवि को इस जगत से जोड़ती हुई दोनों की विशेषता को भी बनाये रखती है | साहित्य में सम्वेदना तत्व की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से की जाती है| कवि इस अभिव्यक्ति के लिए अभिव्यंजना कौशल का सहारा लेता है | इस प्रकार कहा जाता जा सकता है कि कवि काव्य-सम्वेदना की अभिव्यक्ति में परांगत है जिसकी काव्य-सम्वेदना का आधार तत्कालीन सामाजिक परिवेश है जिसको अनुभूत कर वह स्व और पर को अभिव्यक्त करता है| अनामिका की काव्य-सम्वेदना को रूप और दिशा देने में बिहार का प्राकृतिक सौन्दर्य मानवीय सुख-दुःख टालस्टाय की लोकमंगल की भावना से प्रभावित जीवन दृष्टि, जीवन-शक्ति सम्बन्ध सिध्दांत, स्त्रीवादी चेतना को प्रतक्ष्य-अप्रतक्ष्य रूप से प्रभावित किया है| कसी भी वस्तु भाव या स्थिति का ह्रदय पर जो प्रभाव पड़ता है और उसकी जो प्रतिक्रिया होती है, उसे ही सम्वेदना कहतें हैं | इस बात को दुसरे ढ़ंग से भी समझा जा सकता है| यह दुनिया कितनी बड़ी है और कितनी भरी-पूरी है| इसके इतने सारे रंग और रूप है| इतने सारे पदार्थ हैं, इतने वस्तूवें हैं| प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक घटना हमपर किसी न किसी रूप में असर डालती है, जैसे पानी में कंकड़ फेकने से तरंग उठती है वैसे ही हम जब कुछ देखतें-सुनते हैं या जब हमें कुछ होता है तो हम भी प्रतिक्रिया करतें हैं| हमारा ह्रदय प्रभावित होता है और तब इस प्रभाव की अनुरूप भाव उत्पन्न होता है| वस्तूवों का ह्रदय पर पड़ने वाला यही प्रभाव और उससे उत्पन्न प्रतिक्रिया ही सम्वेदना कहलाती है| सम्वेदना के भिन्न-भिन्न रूपों में बात करने से पहली बात जो हम हमेशा ध्यान में रखें वह यह कि कोई भी बात हवा में नहीं हो सकती है|कहने का अर्थ है कि जब हम किसी कवी के बारे में बात कर रहे हैं तो उसकी कविता को सामने रखना पड़ेगा| कविता के एक-एक शब्द को पढ़ना समझना पड़ेगा |अनामिका बिहार प्रान्त के हैं अतः उनकी कविता पर बिहार प्रान्त का असर स्वतः ही देखा जा सकता है |अपने इन्द्रियों के द्वारा दूसरे के प्रति अपनी निजी अनुभव या ज्ञान को सम्वेदना कहतें हैं| हिंदी ज्ञान कोष के अनुसार सम्वेदना का अर्थ है-

मन में होने वाला बोध या अनुभव या अनुभूति होता है|किसी के शोक, दुःख, हानि, कष्ट आदि को देखकर मन में उत्पन्न होने वाला दुःख या सहानुभूति हीं संवेदना कहलाता है| दूसरों की वेदना से उत्पन्न वेदना|सम्वेदना का अर्थ ज्ञानइन्द्रियों के द्वारा प्राप्त अनुभव या ज्ञान है किन्तु आजकल सामान्यतः इसका प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में अधिक होने लगा है | मनोविज्ञान में अब भी इस शब्द का प्रयोग इसके मूल अर्थ में ही किया जाता है और उस अर्थ में यह किसी बाह्य उत्तेजक के प्रति शरीर अंग की सर्वप्रथम सचेतन प्रतिक्रिया होती है|इसी के बदले में व्यक्ति अपने परिवेश के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है| सम्वेदना के लिए किसी उत्तेजक का होना आवश्यक माना जाता है| उससे सम्बन्धित गुण ही मानव में सम्वेदना जाग्रत करतें हैं|

2. बाल्यावस्था के प्रति संवेदना

अनामिका स्त्रीवादी रचनाकर होने के खातिर सिर्फ अपनी रचनाओं में स्त्री की ही बात नहीं करतीं बल्कि समाज के हर अनादरित और समादरित वर्ण, वर्ग उसमें शामिल है| परिवार के सदस्यों का दबाव हो या पेट पालने की विडंबना हो, सबके लिए उन बच्चों को छोटी उम्र में ही काम करना पड़ता है जिस उम्र में उन्हें पढ़ना-लिखना चाहिए | एक रिपोर्ट की माने तो हर साल 12 लाख बच्चों का अपहरण कर या तो उन्हें बेच जाता है या उनका शोषण किया जाता है|अनामिका की कविता कूड़ा बीनते बच्चे

उन्हें हमेशा जल्दी रहती है|उनके पेट में चूहे कूदते हैं|
और खून में दौड़तीं हैं गिलहरी /बड़े-बड़े डग भरते /चलते हैं वे तो /
उनका ढीला-ढाला कुर्ता /तन जाता है फूलकर उनके पीछे /
जैसे की हो पाल कश्ती का /बोरियों से टनन-टनन गाती हुई /रम की बोतलें
उनकी झुकी हुई पीठ की रीढ़ से /कभी कभी कहतीं हैं-
कैसी हो कैसा है मंडी का हाल /माचिस के खाली डिब्बों के
छोटे-छोटे कई घर /खुद तो वे कहीं नहीं रहते /पर उन्हें खूब पता है घर का मतलब|1

3. प्रकृति के प्रति संवेदना

प्रकृति और मानव के बीच गहरा संबंध है |दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं| मानव के लिए धरती उसके घर का आँगन, आसमान, छत, सूर्य, चाँद, तारे, दीपक, सागर, नदी आदि उसके आहार का साधन हैं| मानव के लिए प्रकृति से अच्छा गुरु नहीं है | आज तक मानव ने जो कुछ भी हासिल किया वह सब प्रकृति से सीखकर ही किया है| न्यूटन जैसे महान वैज्ञानिकों को गुरुत्वाकर्षण बल के बारे मे सीख दी, वहीं कवियों ने प्रकृति को अपना चितेरा चीज मानकर उसके बारे में अनेकों कविताएं लिखी| जिससे आम आदमी ने प्रकृति के बारे में बहुत कुछ सीखा| अनामिका के शुरुवाती दौर की कविताएं में प्रकृति चित्रण ही मुख्य रहा है| शीतल स्पर्श एक धूप को काव्य संग्रह में कविताएं बाल प्रवृति के अनुरूप लिखा गया है| बच्चों का चंचल मन धूप को अपने अपने कोमल हाथों से छूना चाहता है और साथ ही चाँद को पाना चाहता है| अनामिका इस अभिव्यक्ति को को अपनी कविताओं में बड़े सुंदरता से अभिव्यक्त करती हैं|

शीतल स्पर्श एक धूप को दें /ढलकर कंधों पर वह द्रवित होगी
बहेगा सोना धरती पर /चाँदनी को चूम लें गर्म होंठों से,
छिटक अंक से जाएगी वह /चाँदी का वरक नभ पर बिछेगा |6

4. प्रकृति के प्रति संवेदना

प्रकृति और मानव के बीच घहरा संबंध है| दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं | मानव के लिए धरती उसके घर का आँगन, आसमान, छत, सूर्य, चाँद, तारे, दीपक, सागर, नदी आदि उसके आहार का साधन हैं | मानव के लिए प्रकृति से अच्छा गुरु नहीं है| आज तक मानव ने जो कुछ भी हासिल किया वह सब प्रकृति से सीखकर ही किया है | न्यूटन जैसे महान वैज्ञानिकों को गुरुत्वाकर्षण बल के बारे मे सीख दी, वहीं कवियों ने प्रकृति को अपना चितेरा चीज मानकर उसके बारे में अनेकों कविताएं लिखी| जिससे आम आदमी ने प्रकृति के बारे में बहुत कुछ सीखा| अनामिका के शुरुवाती दौर की कविताएं में प्रकृति चित्रण ही मुख्य रहा है| शीतल स्पर्श एक धूप को काव्य संग्रह में कविताएं बाल प्रवृति के अनुरूप लिखा गया है|बच्चों का चंचल मन धूप को अपने अपने कोमल हाथों से छूना चाहता है और साथ ही चाँद को पाना चाहता है| अनामिका इस अभिव्यक्ति को को अपनी कविताओं में बड़े सुंदरता से अभिव्यक्त करती हैं|

शीतल स्पर्श एक धूप को दें /ढलकर कंधों पर वह द्रवित होगी
बहेगा सोना धरती पर /चाँदनी को चूम लें गर्म होंठों से,
छिटक अंक से जाएगी वह/चाँदी का वरक नभ पर बिछेगा|6

चेतन व अवचेतन वस्तु के प्रति संवेदना

दु:खों की अभिव्यक्ति अपनी भिन्न-भिन्न प्रजातियों में भी बनती है| दु:ख चाहे चेतन का हो या अचेतन का हो, अनामिका की दृष्टि से वह मुखर होता है| आईने का दु:ख जो आंधी बस्तियों में धूल खाता है, गंजों का जिनके सिर मुड़ते ही पड़े ओले, कंघों का जो गंजों की बस्ती में बिकने गए, भैसों का जो बैठी पगुराने लाचार, उन बीनों का जो भैंस के आगे बजने को विवश साधारण सी लगने वाली ये उक्तियाँ या स्थितियाँ कविता को मुखर बना देती हैं|इनकी पीड़ा को अनामिका ने अपनी मेघ शक्ति के द्वारा मुखरित किया है|

किसको कहें दुश्मन /किससे संघर्ष करें/कि करीब से देखने पर
सब ही लाचार लगे /किसिम-किसिम के दु:खों में गिरफ्तार !14

टिकट चाहे वह बस की हो या चाहे ट्रेन की, डाक की हो या जहाज की- इनको काम होने तक ही सुरक्षित रखा जाता है| टिकट की यह शक्ति महत्तम ही है| लेन-देन के वक्त दो अजनबियों के बीच सेतु का काम करता है| अनामिका उसके प्रायोजनिकता को समझने की कोशिश करतीं हैं|

ये बढ़तें हैं बिना पाँव के /थसाठस्स ठुँसी हुई बस में|
आँखों-आँखों में हो जाती है गुफ्तगू /और हाथों-हाथ बढ़ता चला आता है सिक्का,
पुल सा बन जाता है अनजान हाथों का /दुनिया का सबसे अनूठा पुल|

....

भरी सभा में /चिरपरिचित आँखों का गुप-चुप संवाद
दुनिया का शायद सबसे बड़ा होता है रोमांस-/ऐसा समझती थी मैं आज के पहले|
आज लग रहा है की अनजान आँखों का /यह भाई चारा
शायद उससे भी बड़ा है यह रोमांस /आदमी का आदमीयत से रोमांस यह
शायद है /आदिकालीन| 15

कैलेंडर हमारी दैनिक जीवन में अपना महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है| जो कैलेंडर हमारे जीवन से गायब होता जा रहा है उसके परिदृश्य को उजागर करना आम बात नहीं है| कैलेंडर को अपने जीवन संदर्भ में जोड़कर देखने की अनामिका की दृष्टि बानगी को इस प्रकार समझ जा सकता है|

कैलेंडर /दूध और अखबारवाले की /एक बड़ी सख्त हाजिरी /
जिसमें कि प्राक्सी नहीं चलती !/कैलेंडर जीवन की /बची हुई हरीयाली
तोता-हिरण-शेर और घने जंगल /हँसते हुई औरत-/बचे हुए हैं इन्हीं में
/अब तक /एक दफ़्तरी चाहिए /तिथियों के पार इन्हें ले जाए
चिंदी-चिंदी ज़िंदगी पर /एक टिकाऊ, सुंदर ज़िल्द चढ़ाये !16

5. परिजनों के प्रति संवेदना

मानव समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में परिवार को जाना जाता है| मानव जीवन की पहली पाठशाला ही परिवार है|पहले भारत में संयुक्त परिवार थे परंतु कालांतर में यह एकल परिवार में परिवर्तित होता जा रहा है| इन एकल परिवारों में भौतिक सुख सुविधाएं तो बहुततायत हैं परंतु अपने परिजनों और रिश्तेदारों की कमी सदैव ही खलती रहती है| ये अपने प्रियजन ही हमारे सुख-दुख के साथी होते हैं| अपने जीवन में परिजनों के साथ होना बहुत जरूरी होता है वे जीवन के सबसे बहुमूल्य रत्न के समान होते हैं| अपने परिजनों के बिछड़ने का डर अकेलेपन और व्यथा को अनामिका की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है-

वो इतने बड़े-बड़े बदल के खरहे /घुस आए थे जो /वैसे ही है अब तक
घहर-महर !/मौसम का बहेलिया
.....
किससे मैं क्या बोलूँ, बाबूजी ?/किससे अब मन खोलूँ, बाबूजी ?
.....
एक बार आपके आ जाने के बाद /गोदी में सोऊँगी, बाबूजी !
जी भर कर रोऊँगी, बाबूजी|24

6. विस्थापित जन के प्रति संवेदना

अनामिका की रचनाओं में विस्थापित जन के प्रति संवेदना दिखाई देती है| ये उपेक्षित साधरण जन सभी समाज के बाहर के लोग हैं | इन उपेक्षित लोगों की ज़िंदगी हमेशा अभाव में रहती है, उनकी जेबें हमेशा ही खाली रहतीं हैं| अनामिका प्रगतिवादी कवियों में अग्रमयी स्थान रखतीं हैं|वे हमेशा अपनी रचनाओं के माध्यम से शोषित वर्गों के प्रति आक्रोशित दिखाई देतीं हैं| गरीब और शोषित लोग पेट भरकर खाना भी नहीं खा सकते हैं| अनामिका के बारे में कहना गलत न होगा कि वे प्रगतिवादी सोच से प्रभावित हैं| उनकी रचनाओं में प्रगतिवादी रचनाकारों जैसी शोषित और उपेक्षित वर्गों के प्रति संघर्षमयी रचनाएं दिखाई पड़ती है| अनामिका ने अपनी कविताओं में बेघर लोगों के प्रति संवेदना दिखाई है| इन लोगों का न कोई घर होता है, न इंतजार करने वाले कोई अपने, न खिलाने के लिए, अपना दुःख दर्द बाँटने के लिए कोई अपना नहीं होता| ऐसे लोगों की ज़िंदगी को किस तरह की ज़िंदगी कह सकते हैं यह प्रश्न सर्वाधिक प्रमुखता के साथ आनामिक अपनी रचनाओं में उठातीं हैं| समाज सबके लिए है बावजूद इसके कुछ लोग उपेक्षित सा रह जाते हैं| अपने जीवन के खालीपन को वे झेलते हैं| जलेबा बुआ में अनामिका कहती हैं-

रोज नल से/धीरे-धीरे गिरता है दिन
खाली-पड़े में, मन में बासन में/आधा-पौना |
काँटे घड़ी के/बुढिया की लाठी से
टो-टो कर देखतें हैं रास्ता,/मगर किसका ?
कोई उसे जानता नहीं/पूरे शहर में कि घर में |
किसी की वो कोई नहीं है/कोई उसका नहीं है,
कोई नहीं होता है/जैसे डाली का पत्ता
कोई नहीं होती रोटी तवे की/कोई नहीं पीली सुपली का चावल,
कोई नहीं होते कंघी के/टूटे उलझे बाल|28

7. वृद्धों के प्रति संवेदना

समाज और अपनों से वंचित रहने वाला एक वर्ग और भी है जो खुद की तलाश और अपने होने के लिए क्षमा याचना करता है- यह वर्ग है वृद्धजन|अनमिका का मानना है कि वृद्धाएँ वृद्धों से अधिक मानसिक तऔर पर सुखी होती हैं| परिवार के अनुभवी लोग दूसरों की आँखों में देखकर ही जान जाते हैं कि उनके प्रति उनमें स्नेह है कि नहीं| उनकी आँखें अपनों को देखकर चमक रही हैं कि नहीं | आस-पास के लोग उनकी उपयोगिता को कितना प्रायोजनिक मानतें हैं, यह वृद्धजन जानतें हैं, उन्हें बताने की जरूरत नहीं होती| अनामिका की रचनाओं में वृद्धजन किसी न किसी रूप में शामिल ही रहतें हैं| अनामिका के मन में वृद्धों के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव है|वृद्धों की यथा स्थिति का चित्रण उनकी उपयोगिता को भी अनामिका अपनी रचनाओं में रेखांकित करतीं हैं | अनामिका मानती हैं कि आज के वैश्वीकरण के बाजार में जहाँ एक तरफ वृद्धाओं को घर में खलल डालने के रूप में देखा जाता है वहीं दूसरी तरफ ये वृद्ध बड़े काम के सिद्ध होते हैं- बच्चों की देखभाल, खाली घर के छोटे-मोटे कार्य को करना, घर की देखभाल के लिए एक अनिवार्यता जिस पर आँख मूँदकर विश्वास किया जा सके हर जगह वृद्धों की जरूरत बनी रहती है| फिर भी इस आधुनिक बाजारीकरण दुनिया में वृद्धों को निरस्ता और अनदेखी के माहौल से गुजरना ही पड़ता है| अनामिका बुजुर्गों के प्रति बहुत ही ज्यादा संवेदनशील हैं| अपने घर में ही बेघर की तरह रहने वाले इन बुजुर्गों के मन की टोह को जानने के प्रयास अपने ही घर वाले नहीं करते| जीवन के तमाम अनुभवों वाले इन बुजुर्गों को माँ सम्मान और स्नेह देना हमार ही कर्तव्य है |

8. निष्कर्ष

अनामिका आजादी के बाद सठोत्तरी की रचनाकार हैं| बिहार प्रदेश देश की क्रांति नीतियों का केंद्र बिन्दु था | इसी का प्रभाव भी अनामिका की रचनाओं में बहुतायता के साथ देखा जा सकता है|अनामिका के रचनाओं में संवेदना के सभी रूप दिखाई पड़ते हैं| इसीके साथ उनकी रचनाओं में सौन्दर्यान्वेषण को भी महत्व मिलता है| संवेदना के विविध रूप अनामिक की रचनाओं में दिखाई पड़ते हैं| स्त्री के प्रति संवेदना का ज्वार तो उनकी रचनाओं में दिखाई पड़ता है इसके अलावा भी बाल्यावस्था के प्रति संवेदना, प्रकृति के प्रति संवेदना, वृद्ध जनों के प्रति, देश के प्रति संवेदना, परिजनों के प्रति संवेदना, मित्रता के प्रति संवेदना, विस्थापितजनों के प्रति संवेदना, शहरों एवं ग्रामों के प्रति संवेदना, कृषकों के प्रति संवेदना, देश के प्रति संवेदना के प्रति संवेदना, शिक्षा के प्रति संवेदना, मानवता के प्रति संवेदना, समाज और परिवेश के प्रति संवेदना, धर्म एवं दर्शन के प्रति संवेदना, राजनैतिक संवेदना, लोक संस्कृति के प्रति संवेदना आदि बड़े विस्तार से दिखाई पड़ती है| अपने आस-पास के हर चेतन और अचेतन को लेकर उन्होंने अपनी रचना धार्मिकता को पूरा किया है| इसी के साथ अनामिका की रचनाओं में शिक्षित-पीड़ित और उपेक्षित, सरलता और सहजता के सभी मान दंड को दिखाया गया है| अनामिका ने अपनी रचनाओं में विस्तार और गहराई को जिस ठंग से प्रस्तुत किया है वह दूसरों के लिए प्ररण का स्रोत बन गया है|

अनामिका अपनी इस अद्भुत शक्ति से समाज की संकीर्णता को विकसोन्मुख की ओर अग्रसर करती हैं| अनामिका जैसी सशक्त रचनाकार ने हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में मानव के संवेदनाओं का पालन पोषण कर मानव के सभी भावनाओं को भावोत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त कर न केवल परंपरागत मार्ग को नवलता प्रदान की, बल्कि उनका आगमन हिन्दी साहित्य के लिए नवोद्भावना का कारण बना है|अनामिका अपनी रचनाओं में अनेक दुसह्य रास्तों को पार करती एक बड़े ठहराव के साथ अपनी रचनाधार्मिकता को पूरा करती हैं| अनामिका में साहित्य साधन की संपूर्णता दिखाई देती है| जीवन के जिन अनेक रूपों को अनामिका ने समझा और जाना है उसी को बिना किसी बनावट के अपने साहित्य का हिस्सा बनाती हैं|